आपने लिखा

अंक 48 ज्ञानवर्द्धक रहा। इसकी उत्कृष्टता को देखते हुए कई बार मन में सवाल उठता है कि इसे सभी प्राथमिक व माध्यमिक स्कूलों में क्यों नहीं अलग से पढ़ाया जा सकता। इससे छात्रों को छद्म ज्ञान से मुक्ति मिलेगी और वे विज्ञान विषय की रोचकता को समझने में समर्थ होंगे। उनके तार्किक ज्ञान में वृद्धि होगी। लेकिन ऐसा संभव हो तब न!

'डॉक्टर कालबाग और विज्ञान' लेख प्रेरणादायक लगा। ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं। इन्हें नायक कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी।

हाल्डेन के लेख तो लगातार जीवन के बारे में जानकारी दे रहे हैं जो अमूल्य है। 'क्या हम अपने विद्यार्थियों के साथ न्याय कर रहे हैं?' लेख एक ईमानदार अध्यापक की व्यथा को दर्शाता है। लेखिका ने शिक्षा की सही स्थिति का नज़ारा पेश किया है। सच में हमारी शिक्षा व्यवस्था छात्रों की क्षमताओं और संभावनाओं को कुचल रही है। सभी विद्यार्थी अंकों की दौड़ में शामिल हैं। यह दौड़ उनमें सामुदायिकता का अभाव पैदा कर रही है। लगता है सभी को तोता बनना मंज़ूर है।

'तेइस नुआ दो सौ सात' के लेखक को साधुवाद। इस कहानी को पढ़कर अनायास मुझे अपने गणित के अध्यापक याद आ गए। ऐसे अध्यापकों की मौजूदा दौर में भी कमी नहीं है, जो प्रतिभाओं को कुचलने में आनंद महसूस करते हैं।

'कहानी सुनाने का हुनर' वाकई लाजवाब रहा। निःसंदेह आज अध्यापकों में कहानी कहने की कला का अभाव दिखता है। यदि इसे स्कूली पाठ्यक्रम में अनिवार्य कर दिया जाए तो इससे सार्थक और कुछ नहीं हो सकता।

रमेश शर्मा
केशवपुरम, दिल्ली

अंक 48 पहले की तरह उपयोगी लगा। 'दुनिया को नापना' लेख रोचक लगा। मैंने सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण के बारे में पढ़ा और देखा भी परन्तु शुक्र का सूर्य के सामने से गुज़रना कभी नहीं सुना या देखा था। संदर्भ के साथ मिले चश्मे से इसे मैंने देखा। 'उड़ते ड्रेगन' पढ़ते समय बचपन की यादों में खो गया।

कमान सिंह पदम सिंह गोरखा
येरवडा खुला कारागार, पुणे

संदर्भ का ताज़ा अंक मुझे प्राप्त हो गया है। सामग्री पसंद आई। लेकिन फिर भी लिखना पड़ रहा है कि पिछले कुछ अंकों की सामग्री में अब इतनी गहनता नहीं रही जितनी होनी चाहिए। स्तर बढ़ाएं तो अच्छा रहेगा।

बजरंग लाल जेठू
लक्ष्मणगढ़, सीकर, राजस्थान

आपके द्वारा भेजी गई संदर्भ का अंक 48 मिला। साथ ही शुक्र पारगमन देखने के लिए चश्मा भी मिला। यहां हमने और हमारे कई साथियों ने उस चश्मे से वह दुर्लभ नज़ारा भी देखा।

राजकुमार गुप्ता
पैठण खुली जेल

आपकी पत्रिका गणित और विज्ञान के छात्रों और शिक्षकों के लिए उपयोगी है। अभी तक मैंने संदर्भ का सिर्फ एक अंक ही पढ़ा है और मैं इसका कायल हो गया हूं।

बिष्णु सोनार
डिब्रूगढ़, असम

आपसे अनुरोध है

- संदर्भ का वार्षिक सदस्यता शुल्क,
- अपनी सदस्यता का नवीनीकरण,
- अपने पते में परिवर्तन की सूचना,
- संदर्भ न मिलने संबंधी खत

'एकलव्य' भोपाल के पते पर भेजिए।

हमारे वितरण विभाग का पता है:

एकलव्य
ई-7/453, एच.आई.जी.
अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म. प्र.
पिन: 462016